हमारे अगुवों की ओर से संदेश

चेला बनाने वाला समुदाय

विज्ञप्ति जारी करने की तारीख: गुरुवार, 20 अप्रेल 2017

''रो मत,'' मेरी कलीसिया की एक सदस्या ने मुझसे कहा जब मैंने अपने एक रिश्तेदार को बहुत ही त्रासदपूर्ण दुर्घटना में खो दिया। उस बहन ने आगे कहा, ''बाइबल से इस पद को पढ़िए।'' किन्तु मैं उनकी बात को सुन न सकी। मुझे किसी ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता थी जो मेरी बात सुन सके, जो मेरे साथ रो सके, और जो गहरे शोक के उन दिनों में खुल कर मेरा साथ दे सके। उस समय मुझे बाइबल की किसी शिक्षा की आवश्यकता नहीं थी – मुझे एक मित्र की आवश्यकता थी।

कुछ वर्षों पूर्व एक स्थानीय मण्डली के एक पासवान ने मुझ से कहा, ''मैं परामर्शदान *(कॉउन्सिलिंग)* की आवश्यकता को नहीं मानता। यह आवश्यक है कि लोग यह सीखें कि उन्हें परमेश्वर के वचन का पालन किस तरह से करना है, बजाए कि किसी व्यक्ति के द्वारा दिए जाने वाले परामर्शों पर निर्भर रहने के। परामर्श देने से लोग निर्भर होने लगते हैं।'' कुछ वर्षों के पश्चात, उस पासवान की मण्डली के एक सदस्य मण्डली के विरुद्ध अपनी कुढ़न व्यक्त करते हुए बताने लगे कि किस तरह से उनके एक रिश्तेदार की प्राणघातक बीमारी के दौरान उसने अपने आप को अकेला और त्याग दिया हुआ महसूस किया और अन्ततः उस रिश्तेदार की मृत्यु हो गई। कष्ट, सन्देह, और आशाहीन दशा के कठिन समय में उनका पासवान कहाँ था?

कठिन समयों हमें किसी ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता होती है जो हमारा साथ दे सके। जब हम संघर्ष, द्वेष, बीमारी, और मृत्यु जैसी कठिनाइयों का सामना कर रहे होते हैं उस समय हमें दूसरों के सहयोग की आवश्यकता होती है। हमें ऐसे समझदार लोगों की संगति की आवश्यकता होती है जो हमारी कमजोरियों और ताकतों को पहचानने में, और उनके कारणों का पता लगाने में हमारी सहायता कर सकें। हमें यौन सम्बन्धों, वित्त प्रबन्धन, और जीवन के महत्वपूर्ण निर्णयों – विवाह, बच्चों का पालनपोषण, व्यवसाय का चुनाव, सेवानिवृत्ति जैसे और अन्य निर्णय – को लेते समय मसीह–केन्द्रित मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है।

दूसरे शब्दों में, हमें *शिष्यता* की आवश्यकता है। मसीही परामर्शदान (*क्रिश्चन कॉउन्सिलिंग)* का अर्थ दूसरों को सलाह देना या यह बताना नहीं है कि उन्हें क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। यह दूसरों के साथ खड़े होने और उनका इस रीति से साथ देने से सम्बन्धित है जिससे कि उन्हें मसीह के पीछे चलने के उनके निर्णय के आधार पर निर्णय लेने में

सहायता मिल सके। शिष्यता का यही अर्थ है। इसका अर्थ है, अपने दिन प्रतिदिन के जीवन में मसीह का अनुसरण करना, और ऐसा करने के लिए हमें अपने समुदाय के अन्य सदस्यों की करुणामय संगति और ऐसे विशेष वरदानों का सहारा चाहिए जो विशेष चुनौतियों का सामना करने में हमारी सहायता कर सके।

वर्तमान में, मसीही संसार में, शिष्यता को बहुत से नाम दिए गए है: कोचिंग, थेरेपी, आत्मिक मार्गदर्शन, परामर्श, पासवानी, और सलाह। यह सिर्फ यह दर्शाने का एक तरीका है कि ऐसी विशेषज्ञता रखने वाले लोगों को ढूंढ़ने की आवश्यकता कितनी बड़ी है जो शिष्यता के इन विशिष्ट क्षेत्रों में वास्तव में सहायक सिद्ध हों। उदाहरण के लिए, अवसाद या सीखने की क्षमता की कमी ऐसे विषय हैं जिनके लिए परामर्शदाता के रूप में सेवाएं देने वाले व्यक्ति को विशेष रूप से प्रशिक्षित होना आवश्यक है।

बुनियादी स्तर पर, हम में से प्रत्येक को यह अद्भुत अवसर प्राप्त हुआ है कि हम दूसरों के साथ उनकी शिष्यता की प्रक्रिया में चल सकें। यहाँ तक कि अत्यंत कठिन और चुनौतीपूर्ण समयों में, कष्ट झेल रहे भाई बहनों के प्रति, हम बिना खोखले शब्दों या सुझावों के, तरस खाने वाले लोगों के रूप में उनके निकट खड़े रह सकते हैं। हम सिर्फ उनकी बातों को सुनते रहें। दक्षिण विश्व की अनेक स्थानीय मण्डलियाँ, हिंसा और कष्ट के सन्दर्भ में, यह सीख रही हैं कि किसी प्रकार से सक्रियता से सुनने के द्वारा हम दूसरों को सहारा दे सकते हैं। उन्होंने उस चंगा करने वाली सामर्थ को जान लिया है जो फैसला सुनाने वाले रवैये से मुक्त रहते हुए सिर्फ उनके साथ खड़े रहने में छिपी हुई है। एक बार फिर से तरस उनकी विशेषता बन जाती है।

किन्तु, दक्षिण विश्व के अनेक स्थानों में, विशिष्ट क्षेत्रों में परामर्शदान की सेवकाई की आवश्यकता बहुत बड़ी है। मानसिक बीमारियों से निपटने में लोगों की सहायता किस प्रकार से करना है? ऐसे यादों से छुटकारा पाने में किस प्रकार से सहायता करना चाहिए जिनसे निपटने के लिए विशिष्ट परामर्शदान कला होना आवश्यक है? उत्तर विश्व के भारी भरकम संसाधनों को किस प्रकार से दक्षिण विश्व की हमारी कलीसियाओं के साथ साझा किया जा सकता है? मैं यहाँ पर परामर्शदान, विवादों के समाधान, सलाह, थेरेपी इत्यादि के क्षेत्र से सम्बन्धित शिक्षाप्रद संसाधनों के बारे में बात कर रहा हूँ।

कूरियर के वर्तमान अंक में यह विनम्र पहल की गई है कि इन मुद्दों पर अपनी बात कहने को अपनी कलीसियाओं को आमंत्रित किया जाए और इन मुद्दों पर बहुसांस्कृति तरीकों से अपनी बात रखी जाए। हमें अपने शिक्षाप्रद संसाधनों, अनुभवों और आवश्यकताओं को बाँटने की आवश्यकता है ताकि शिष्यता की अपनी बुलाहट में साथ मिलकर आगे बढ़ते जाएं।

परमेश्वर संसार भर की हमारी कलीसियाओं की सहायता करे कि हम तरस खाते हुए, और चंगाई देने वाले समुदायों के रूप में आगे बढ़ सकें जिससे कि हम शिष्यता की अपनी बुलाहट को पूरी गम्भीरता के साथ पूरा कर सकें।

– सीज़र गार्सिया, एमडब्लयूसी जनरल सेक्रटरी, बगोटा, कोलम्बिया मुख्यालय से।

यह लेख सबसे पहली बार अप्रेल 2017 की *कूरियर* पत्रिका में प्रकाशित किया गया।